अध्याय-4

प्रथम कृषक एवं पशुपालक

शबनम स्कूल में 'दोपहर का खाना' खाने के लिए बैठी हुई थी। आज उसे खाने में चावल, राजमा एवं आलू की सब्जी मिली। कल ही उसने पुलाव और सोयाबीन की सब्जी खायी थी। वह सोच रही थी कि हमारे पास खाने के लिए इतने सारे अनाज, सब्जी, फल एवं दूध कहाँ से आते हैं?

मध्याह्न भोजन के तहत समूह में खाते बच्चे

आज हम विभिन्न प्रकार का भोजन करते हैं। अनाज से बने भोजन, सब्जी, दूध–दही, मक्खन, मांस–मछली आदि। यह हमें अधिकांशतः उगाई गई फसलों और पालतू पशुओं से मिलते हैं। परंतु आरंभिक मानव कुछ भी नहीं उगाते थे और सब कुछ जंगलों से बटोर लाते थे। इनमें जानवरों का शिकार और कंदमूल एवं फलों को इकट्ठा करने के तरीके शामिल थे। जो शिकारी एवं खाद्य संग्राहक लोग लाखों सालों से जंगली फल व अनाज बटोरते थे उन्हें

मालूम तो होगा कि कैसे बीज से पौधे उगता है। उन्होंने आस–पास ऐसे खूब सारे पौधों को उगते देखा होगा, फिर भी उन्होंने खेती शुरू नहीं की। इसका क्या कारण रहा होगा?जिन लोगों ने खेती शुरू की उनको क्या जरूरत पड़ी कि वे खेती करने लगे। इन बातों की पक्की जानकारी तो नहीं फिर भी उन दिनों के जो निशान और सबूत मिलते हैं उनसे हम कुछ अनुमान लगा सकते हैं।

खेती की शुरूआत

कृषि के आरंभ होने का मतलब था कोई भी अनाज ऐसे स्थान पर उपजाया जाना जहाँ वह अपने आप नहीं उगता हो। सबसे पहले खेती किसने और कहाँ शुरू की ? अनुमान है कि खेती की शुरुआत ईरान और इराक देश की पहाड़ियों की तलहटी में हुई। आज से लगभग 8000 से 10000 साल पहले वहाँ रहने वाले लोगों ने सबसे पहले खेती करना शुरू किया। बाद में जगह–जगह लोगों के समूहों द्वारा खेती करनी शुरू हुई। अपने देश में खेती की शुरूआत आज से 5–6 हजार साल पहले पश्चिमोत्तर भारत में हुई। समूह की महिलाएँ पेड़–पौधों के बारे में बहुत जानकारी रखती थीं क्योंकि आम तौर पर जंगली फल दाने, जड़ें आदि इकट्ठा करने का काम वे ही किया करती थीं। वे पेड़ पौधों को करीब से देखते–देखते उनके बारे में काफी कुछ समझने लगी थीं। आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने इस जानकारी का उपयोग खुद पौधे उगाने में किया। ऐसा माना जाता है कि मध्य एशिया के क्षेत्र में रहने वाले शिकारियों के एक समूह ने दूसरे समूह को खदेड़ दिया हो। नई जगह पर, जहाँ वह गए उनलोगों को वे सारे जंगली फसल नहीं मिल पा रही थी, जिसके खाने के वे अभ्यस्त हो गए थे। अतः उन्होंने नए क्षेत्र में अपने साथ लाए कुछ बीजों को जमीन में डाल दिया। उसे नियमित पानी से सिंचित करने लगे। कुछ महीनों में उन पौधों में फल लग गए जिसे पुष्ट होने पर उनलोगों ने उसे काट कर उससे सारे अनाज निकाल लिया। ऐसे ही खेती की शुरूआत हुई। धीरे–धीरे अलग–अलग समूहों ने जंगलों को साफ कर उस पर भी बीजों को बोना शुरू किया इससे जमीन के छोटे टुकड़े पर वे लोग ज्यादा अनाज उपजाने लगे। इस तरह आरंभिक मानव के पास अनाज का एक भंडार हो गया जिसे वे संकट के समय इस्तेमाल

कर सकते थे। इसी के साथ उनकी जीवनशैली में बदलाव आया शिकार करने वाले और फल, अनाज इकट्ठा करने वाले लोग अपना निवास क्षेत्र बदलते रहते थे। मगर अब फसल की रखवाली के लिए खेतों के आस पास स्थाई रूप में रहना आवश्यक हो गया इस तरह आरंभिक गाँव बसे।

आरंभिक मानव द्वारा कृषि कार्य
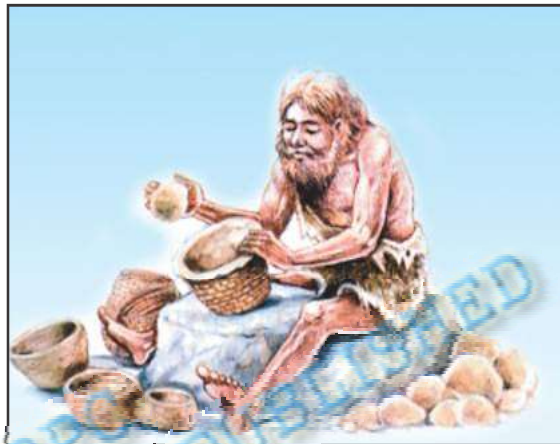
आरंभिक मानव बर्तन बनाता

चूँकि फसल तैयार होने में 4–6 महीने लग जाते थे। इस प्रक्रिया में समूह के सभी लोग आपस में सहयोग करते थे। इस सहयोग से उनके बीच नाता–रिश्ता जिसका आधार आपसी संबंध था शुरू हुआ। स्थायी रूप से एक जगह रह कर फसलों को उपजाने के कारण लोग अब छप्पर वाली झोपड़ियों को बनाना शुरू किये। अनाज के भंडार को रखने के लिए उन्होंने मिट्टी के बर्तनों को बनाना आरंभ किया। धीरे–धीरे कताई–बुनाई शुरू हुई। मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल वे लोग भोजन बनाने एवं खाना खाने में भी करने लगे। शिकारी मानव के जीवन में ये सारे बदलाव हजारों वर्ष में संभव हो सकता था।

आरंभिक मानव के आवास

मानव ने जानवर पालना शुरू किया

जिस समय खेती की शुरूआत हुई लगभग उसी समय पशुपालन भी शुरू हुआ। पशु पालने का काम वस्तुतः शिकारी संग्रहकर्ताओं ने ही पहले किया था। शुरू में जब वे लोग जानवरों का शिकार करते होंगे तो उन्हें पशुओं के बच्चे भी हाथ लग जाते थे। उसे वे पकड़ कर अपने रहने के ठिकाने पर लाते होगें ताकि बड़े होने पर उससे ज्यादा मांस प्राप्त हो सके। इस तरह आरंभिक मानव भेड़ों–बकरियों के नन्हे मेमनों को एवं नन्हे बछड़ों एवं बाछियों को अपने पास बांध कर रखने लगे। धीरे–धीरे उन्हें उन जानवरों की उपयोगिता समझ आई होगी। उन्हें यह लगा होगा कि जानवरों को मार कर खा लेने की बजाए यदि जिन्दा पाला जाए तो बहुत से नए फायदे मिल सकते हैं। आरंभिक मानव ने पशुओं को पालतू बनाते समय कुछ बातों का ध्यान अवश्य रखा होगा। जैसे– ऐसे पशु को पालतू बनाया जाए जिनके लिए आसानी से भोजन उपलब्ध कराया जा सके। वह हिंसक न हो तथा नुकसान न पहुँचाए उन्हें अपने साथ इधर–उधर भी ले जाया जा सके साथ ही शिकार खोजने एवं भोजन ढूंढ़ने में उनसे मदद भी मिले। यही सब बातें सोचकर उसने सबसे पहले कुत्ता, फिर सुअर, भेड़, बकरी और अन्य जानवरों को पालना शुरू किया।

आरंभिक मानव के साथ पालतू पशु

पशुओं को पालने से उन्हें कई तरह के लाभ मिलने लगे। पशुओं से उन्हें खाने की कई चीजें प्राप्त हुईं। उसके ताकत का प्रयोग उन्होंने धीरे–धीरे खेती के काम में भी करने लगे। इससे उन्हें एक जगह से दूसरी जगह जाने में, वस्तुओं को लाने ले जाने में काफी सहायता मिला। पशुओं से उसे जीवंत मांस मिला जिसका इस्तेमाल वे अपनी इच्छा के अनुसार कर सकते थे।

नवपाषाण युग बदलावों का काल

नवपाषाणयुग मानव जीनव के विकास का वह समय है जिसमें मानव पहली बार शिकारी

नवापाषाण युगीन स्थल का मानचित्र

संग्रहकर्त्ता से पशुपालक एवं खाद्य उत्पादक बन गया। इसी काल में आरंभिक गाँव बसने लगे और एक सामाजिक संगठन का विकास हुआ। इस समय के लोग भी पत्थर के औजारों का ही इस्तेमाल करते थे लेकिन वे औजार आकार में छोटे, मजबूत और पहले से ज्यादा धारदार एवं चमकदार थे। पुरातत्वविदों को भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्रों से नवपाषाणकालीन कृषक और पशुपालकों के साक्ष्य मिले हैं। इसके अतिरिक्त बिहार के मुंगेर, चिरांद और झारखण्ड के बहुत सारे क्षेत्र भी नवपाषाण कालीन है। दिए गए मानचित्र में वे सभी स्थल दिखाए गए हैं।

नीचे की तालिका से आप यह जान सकते हैं कि कहाँ–कहाँ अनाज और पालतू जानवरों की हड्डियाँ मिली हैं जो नवपाषाणयुगीन है–

प्राप्त वस्तु	पुरास्थल
गेहूँ, जौ, भेड़, बकरी	मेहरगढ़ (पाकिस्तान)
चावल, जानवर की हड्डियाँ	कोल्डिहवा (उत्तर प्रदेश)
चावल, जानवर के खुर के निशान	मेहरगढ़
गेहूँ दलहन, कुत्ता, भेड़, बकरी	बुर्जहोम (कश्मीर)
गेहूँ, चना, जौ	चिराँद (बिहार)
काला चना, ज्वार–बाजरा, भेड़ सुअर	पैयमपल्ली (आंध्र प्रदेश)

सूक्ष्म निरीक्षण

मेहरगढ़

वर्तमान पाकिस्तान में स्थित मेहरगढ़, संभवतः वह स्थान है जहाँ से सबसे पहले गेहूँ, जौ उगाने और पशु पालने के साक्ष्य मिले हैं। यहाँ पुराविदों को सात स्तर प्राप्त हुए हैं। पहला तीन स्तर नवपाषाण काल का है। यहाँ प्रत्येक स्तर से कृषि उत्पादन और पशुओं में भेड़–बकरी के पालने के साक्ष्य मिले हैं। यहाँ से आयताकार एवं चौकोर घरों के साक्ष्य भी मिले हैं। मृतकों के दफनाने के साक्ष्य भी यहाँ से मिले हैं।

स्तर– खुदाई में किसी पुरास्थल से कई स्तरों के मिलने का तात्पर्य है, वहाँ एक–एक कर कई संस्कृतियाँ उदित हुईं और उसके समाप्त होने पर दूसरी संस्कृति का उदय हुआ।

चिराँद

यह पुरास्थल बिहार के छपरा जिला में है। यहाँ से तीन स्तर मिले हैं। यहाँ से पत्थर के औजार के अलावा बड़ी संख्या में हड्डियों और सींग से बने औजार मिले हैं। यहाँ के घर गोल होते थे। घरों में चूल्हे एक समूह में मिले हैं। मिट्टी के बर्तन काफी सुन्दर हैं जो काले, काले–नीले, लाल–धूसर रंग के हैं यहाँ से गेहूँ, धान, मसूर के साक्ष्य एवं मिट्टी के खिलौने भी मिले हैं।

इस तरह नवपाषाण युगीन मानव कृषि और पशुपालन की शुरुआत के बाद स्थायी रूप से गाँवों को बसा कर रहने लगा। खाद्य संग्राहक मानव अनाज उत्पादक बन गए। गुफा के स्थान पर अब मानव स्थाई घर बना कर रहने लगे। इस युग के लोगों ने वस्त्र पहनना भी शुरू कर दिया। लोगों के मरने के बाद उसका मृतक संस्कार होने लगा। कुल मिलाकर इस युग में लोगों का जीवन स्थायी और सभ्य बना।

अभ्यास

आओ याद करें–

1. वस्तुनिश्ठ प्रश्न–

(क) सबसे पहले किस जानवर को आदमी ने पालतू बनाया?

(i)	कुत्ता	(ii)	बंदर
(iii)	गाय	(iv)	बकरी

(ख) गेहूँ का प्राचीन साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुआ है?

(i)	मेहरगढ़	(ii)	हल्लूर
(iii)	चिराँद	(iv)	पैच्यमपल्ली

(ग) चावल का प्रमाण भारत में कहाँ से मिला है?

(i)	कोल्डिहवा	(ii)	मेहरगढ़
(iii)	चिरौद	(iv)	पैसरा

सुमेलित करे–

चिराँद — उत्तर प्रदेश

मेहरगढ़ — बिहार

बुर्जहोम — पाकिस्तान

कोल्डिहवा — काश्मीर

आइए करके देखे–

(i) खेती की शुरूआत कैसे हुई?

(ii) मानव जीवन में खेती के बाद क्या परिवर्तन आया।

(iii) नवपाषाण कालीन औजारों की विशेषता क्या थी?

आओ चर्चा करें–

(iv) पशुपालन से मानव को क्या–क्या लाभ हुआ

(v) नवपाषाणयुगीन जीवन और आरंभिक मानव के जीवन में क्या अन्तर था।

आओ करके देखे–

(I) नवपाषाणयुगीन मानव जिन फसलों से परिचित थे उनकी सूची बनाएँ और जिन फसलों से आप अभी परिचित हैं उसकी एक सूची बनाएँ, क्या आप नवपाषाणयुगीन फसलों से ज्यादा फसलों के बारे में जानते हैं।